





मातृभाषा को जाने बिना संभव नहीं है लेखन

इविवि के सीनेट हॉल में हुई संगोष्ठी, नाटकों को मंचन भी, कई कॉलेजों में भी आयोजित किया गया मातृभाषा दिवस

प्रयागराज। इविवि समेत कई महाविद्यालयों में बृहस्पतिवार को मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। इविवि में राजभाषा अनुभाग की ओर से आयोजित संगोष्ठी की शुरुआत नामवर सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मुख्य अतिथि वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति एवं नरेश सक्सेना से कहा कि मातृभाषा को जाने बिना लेखन संभव नहीं है।

नरेश सक्सेना ने अपनी कविताओं को चिपरिचित शैली में सुनाया। वहीं, शिवमूर्ति ने अपनी कहारी सीरी उपमा जोग की पृष्ठभूमि पर बात की। सीनेट हॉल



सीनेट हॉल में मातृभाषा दिवस पर नाटक भोलाराम का मंचन किया गया।

में आयोजित कार्यक्रम यूनिवर्सिटी थिएटर ग्रुप की ओर से दो कहानियों उपमा जोग एवं भोलाराम का मंचन किया गया। दोनों नाटकों का

निर्देशन अमितेश कुमार एवं लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता ने किया। निर्देशन सहयोग प्रवीण शेखर का रहा। कार्यक्रम में डीन कला संकाय प्रो.

केएस मिश्र, सांस्कृतिक समिति के अध्यक्ष अली फातमी, प्रो. संतोष भदौरिया, प्रो. चंदा देवी, प्रो. शबनम हमीद आदि मौजूद रहे।

उधर, एसएस खन्ना गर्ल्स डिग्री कॉलेज में हिंदी, उर्दू, बंगाली, पंजाबी भाषा में कार्यक्रम आयोजित किया गया। उर्दू विभाग डॉ. ताहिरा परवीन ने उर्दू जुबान की खूबियों के बारे में बताया और नज्में भी पढ़ीं। हिंदी विभाग के डॉ. आदित्य त्रिपाठी ने हिंदी में गीत प्रस्तुत किया। इविवि के प्राचीन इतिहास विभाग के प्रो. सीडी पांडेय ने भी विचार प्रस्तुत किए। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. लालिमा

सिंह ने की। इस मौके पर डॉ. अनुराधा सिंह आदि मौजूद रहीं।

वहीं, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र में आयोजित सात दिवसीय कार्यशाला बृहस्पतिवार मातृभाषा दिवस को समर्पित की गई। मुख्य वक्ता प्रो. राम किशोर शर्मा ने कहा कि आज के युग में हिंदी के क्षेत्र में रोजगार की पर्याप्त संभावनाएं हैं। कार्यशाला में डॉ. पृथ्वीनाथ पांडेय, शिवेंद्र मिश्र ने भी अपने विचार रखे। जगत तारन गर्ल्स डिग्री कॉलेज में मातृभाषा दिवस पर विशिष्ट व्याख्यान आयोजित किया गया।



भाषा, साहित्य, कला और मीडिया
विभाग के नए आयोजन : सदन
सप्ताहिक शिक्षा नीति 2020
27-29 फरवरी, 2024

हिन्दी विभाग-सदन, दिल्ली विश्वविद्यालय

सदन, दिल्ली



कैंपस का जीवन देख भावुक हुए दर्शक

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज । कैंपस में नौजवानों के व्यक्तित्व को, उनकी आकांक्षाओं, उनके सपनों, उनके प्रेम और उनकी निराशाओं को आकार देता है. कैंपसों के छात्रों की चेतना कैसे तैयारी होती है, जीवन से उनकी क्या उम्मीदें हैं?



क्या यहाँ सभी लोग सफल होते हैं? असफल लोगों के साथ समाज का बर्ताव क्या होता है? असफलता के स्रोत व्यक्ति में हैं या व्यवस्था में? इन सभी सवालों को 'कैंपस कथा' प्रस्तुति के ज़रिए यूनिवर्सिटी थियेटर के अभिनेताओं ने स्वराज विद्यापीठ में अपने बेहतरीन अभिनय में प्रस्तुत किया। प्रस्तुति में हिंदी कथाकार स्वयं प्रकाश की छोटी कहानी 'लड़कियाँ क्या बातें कर रही थीं' है जिसमें कॉलेज जानी वाली लड़कियों की बातचीत के

अनुमान के ज़रिए उनके जीवन के यथार्थ को प्रकट करने की कोशिश की गई है. कहानी एमए में पढ़ रही लड़कियों के बारे में है जो जीवन के निर्णायक मुहाने पर खड़ी हैं. दूसरी कहानी अखिलेश की 'चिट्ठी' लंबी कहानी है जो ऐसे लड़कों के बारे में है जिनमें विद्रोह, मस्ती और

उच्छृंखलता है. समय रेत की तरह उनके हाथों से फिसला जा रहा है. ये कहानी कैंपस के ऐसे नौजवानों की याद दिलाता है जो

कैंपस के फलक पर चमचमाते हुए उभरते हैं लेकिन गुम हो जाते हैं. परिवार, प्रेम, नौकरी कुछ भी इनके हाथ में नहीं लगता. इस कहानी में इलाहाबाद का छात्र जीवन थड़कता है। दोनों कहानियों को प्रस्तुति में इस तरह से जोड़ा गया जैसे दोनों एक दूसरे के पक्ष प्रतिपक्ष हों. लड़कियों की बातों को कहने के लिए सूत्रधार लड़का बनता है तो लड़कों की बात कहने के लिए लड़कियाँ. प्रत्येक दृश्य सजीव लग रहा था चाहे वह चाय की टपरी की गप्प हो या

रूम खोजने की जद्दोजहद या जीवन से निराशा के बाद की महफिलों में आशा खोजने का प्रयास. प्रत्येक संवाद दर्शकों के जीवन के यथार्थ से जुड़ा था जिसे या तो वे भोग चुके थे या भोग रहे हैं. संगीत ने संवाद अदायगी को गहराई दी. प्रस्तुति ने दर्शकों को हंसाया, उनके अपने जीवन में ले गया फिर आखिर में रुलाया भी. प्रस्तुति में मंच पर थे शिवम, श्रीह, शुभी, सौम्या, प्राची, दीपशिखा, सौम्या, माधवी, श्रद्धा, सैफ, गौतम, प्रीत, आदित्य, शानु, हर्षित, जयप्रकाश, गौरव, चेतन, अर्पिता, कीर्ति, प्रज्ञा, दुर्गेश. मंच से बाहर की व्यवस्था संभाली हर्ष, अजीत, आदित्य, पूजा, शुभम आदि ने. प्रस्तुति प्रबंधन किया पौयूष ने और ध्वनि संचालन किया सक्षम ने. अभिनय प्रशिक्षण दिया था जहाँगीर ने, संगीत परिकल्पना अमर की थी और निर्देशन था अमितेश कुमार का. प्रस्तुति में प्रोफेसर आरसी त्रिपाठी, बसंत त्रिपाठी, अमित सिंह, उमेश चंद्र, लक्ष्मण गुप्ता आदि अध्यापकों के साथ अजित बहादुर, शिव गुप्ता, नीरज आदि शहर के गणमान्य रंगकर्मी उपस्थित थे.

नाटक मंचन

प्रयागराज कैपस कथा यानी निराशा प्रेम और उम्मीद की बात

कैपस का जीवन देख भावुक हुए दर्शक

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज (सहज शक्ति) कैपस में नौजवानों के व्यक्तित्व को, उनकी आकांक्षाओं, उनके सपनों, उनके प्रेम और उनकी निराशाओं को आकार देता है. कैपसों के छात्रों की चेतना कैसे तैयारी होती है, जीवन से उनकी क्या उम्मीदें हैं? क्या यहाँ सभी लोग सफल होते हैं? असफल लोगों के साथ समाज का बर्ताव क्या होता है? असफलता के स्रोत व्यक्ति में हैं या व्यवस्था में? इन सभी सवालों को 'कैपस कथा' प्रस्तुति के ज़रिए यूनिवर्सिटी थियेटर के अभिनेताओं ने स्वराज विद्यापीठ में अपने बेहतरीन अभिनय में प्रस्तुत किया।

प्रस्तुति में हिंदी कथाकार स्वयं प्रकाश की छोटी कहानी 'लड़कियाँ क्या बातें कर रही थीं' है जिसमें कॉलेज जानी वाली लड़कियों की बातचीत के अनुमान के ज़रिए उनके जीवन के यथार्थ को प्रकट करने की कोशिश की गई है. कहानी एमए में पढ़ रही लड़कियों के बारे में है जो जीवन के निर्णायक मुहाने पर खड़ी हैं. दूसरी कहानी अखिलेश की 'चिड़्डी'



लंबी कहानी है जो ऐसे लड़कों के बारे में है जिनमें विद्रोह, मस्ती और उधड़खलता है. समय रेत की तरह उनके हाथों से फिसला जा रहा है. ये कहानी कैपस के ऐसे नौजवानों की याद दिलाता है जो कैपस के फलक पर चमचमाते हुए उभरते हैं लेकिन गुम हो जाते हैं. परिवार, प्रेम,

नौकरी कुछ भी इनके हाथ में नहीं लगता. इस कहानी में इलाहाबाद का छात्र जीवन धड़कता है।

दोनों कहानियों को प्रस्तुति में इस तरह से जोड़ा गया जैसे दोनों एक दूसरे के पक्ष प्रतिपक्ष हों. लड़कियों की बातों को कहने के लिए सूत्रधार लड़का बनता

है तो लड़कों की बात कहने के लिए लड़कियाँ. प्रत्येक दृश्य सजीव लग रहा था चाहे वह चाय की टपरी की गप्प हो या रूम खोजने की जद्दोजहद या जीवन से निराशा के बाद की महफिलों में आशा खोजने का प्रयास. प्रत्येक संवाद दर्शकों के जीवन के यथार्थ से जुड़ा था जिसे या

तो वे भोग चुके थे या भोग रहे हैं. संगीत ने संवाद अदायगी को गहराई दी. प्रस्तुति ने दर्शकों को हंसाया, उनके अपने जीवन में ले गया फिर आखिर में रुलाया भी.

प्रस्तुति में मंच पर थे शिवम, श्रीह, शुभी, सौम्या, प्रावी, दीपशिखा, सौम्या, माधवी, श्रद्धा, सैफ, गौतम, प्रीत, आदित्य, शानु, हर्षित, जयप्रकाश, गौरव, चेतन, अर्पिता, कीर्ति, प्रज्ञा, दुर्गेश. मंच से बाहर की व्यवस्था संभाली हर्ष, अजीत, आदित्य, पूजा, शुभम आदि ने. प्रस्तुति प्रबंधन किया पीयूष ने और ध्वनि संचालन किया सक्षम ने. अभिनय प्रशिक्षण दिया था जहाँगीर ने, संगीत परिकल्पना अमर की थी और निर्देशन था अमितेश कुमार का. प्रस्तुति में प्रोफेसर आरसी त्रिपाठी, बसंत त्रिपाठी, अमित सिंह, उमेश चंद्र, लक्ष्मण गुप्ता आदि अध्यापकों के साथ अजित बहादुर, शिव गुप्ता, नीरज आदि शहर के गणमान्य रंगकर्मी उपस्थित थे.

सांसदों के निलंबन पर इंडिया गठबंधन का संयुक्त धरना प्रदर्शन संपन्न

कार्यालय संवाददाता

प्रयागराज (सहज शक्ति) शीतकालीन सत्र के दौरान विपक्ष के सांसदों द्वारा सदन में संसद के अंदर अराजक तत्वों के द्वारा सदन के अंदर कूदना संसद की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए माननीय प्रधानमंत्री का जवाब मांग रहे सांसदों को पूरे शीतकालीन सत्र से बाहर करना लोकतंत्र का हनन है प्रधानमंत्री जी विदेशों में कहते हैं भारत में मदर ऑफ डेमोक्रेसी है सदन के अंदर जब संसद सवाल नहीं कर सकते और सवाल करने पर उनका निलंबन हो जाता है तो किस बात की डेमोक्रेसी क्या देश के लोगों की आवाज को दबाना लोकतंत्र का हनन करना मदर ऑफ डेमोक्रेसी

कहलाता है। आज पूरे देश में इंडिया एलायंस का सामूहिक धरना प्रदर्शन पूरे देश में सांसदों के निलंबन वापस लिए जाने के लिए प्रदर्शन किया। आज उसी क्रम में प्रयागराज पत्थर गिरजाघर सिविल लाइन में संयुक्त रूप से प्रदर्शन संपन्न हुआ जिला अध्यक्ष सर्वेश यादव ने बताया सदन से सड़क तक नरेंद्र मोदी जी की तानाशाही चरम पर है देश की आम जनमानस की आवाज को दबाना चाहते हैं सांसदों के निलंबन करके बड़े-बड़े टीवी चैनल पर भारतीय जनता पार्टी के प्रवक्ता बैठकर बताते हैं कि नरेंद्र मोदी जी की लहर चल रही है मैं उन सबको बताना चाहता हूँ की पूरा देश जानता है कि नरेंद्र मोदी जी

की लहर चल रही है लहर इस बात की चल रही है देश के लोकतंत्र की हनन करने की लहर चल रही है बेरोजगारी लाने की लहर चल रही है महंगाई बढ़ने की लहर चल रही है यार अदानी को फायदा पहुंचाने की लहर चल रही है अपराध को बढ़ावा देने की लहर चल रही है भ्रष्टाचारियों को शरण देने की लहर चल रही है महिला सुरक्षा को खत्म करने की लहर चल रही है किसानों नौजवानों के अधिकार को दबाने की लहर चल रही है और तो और बॉर्डर पर तैनात सिपाहियों की व्यवस्था काम करने की लहर चल रही है यह नरेंद्र मोदी जी की लहर आने वाले 2024 के

चुनाव में भारतीय जनता पार्टी हरा कर देश की जनता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की विदाई करेगी और इंडिया एलायंस को जीतकर स्वागत करेगी। इस दौरान कांग्रेस के जिला अध्यक्ष गंगा पार सुरेश यादव, आम आदमी पार्टी वेड जिलाध्यक्ष सर्वेश यादव, अंजनी मिश्रा, कांग्रेस के वरिष्ठ नेता संजय तिवारी, अरुण कुशवाहा, कांग्रेस के नेता हबीब अहमद, अमन कुमार, रेणुका राय, दीपक गांगुली, इंद्रेश चंद्रा, आर0 आर0 मिश्रा, कांग्रेस पार्षद मुकुल तिवारी, बसंत लाल बागी, सौरभ सिंह, डॉ. जावेद, हरीश वर्मा, विशाल सिंह यादव, निखिल भारतीय आदि साथी मौजूद थे।

स्वत्वाधिकारी, मुद्रक, प्रकाशक
विमलेश मिश्र द्वारा मंजुला वेब आफसेट
ए-12 पत्रकार कालोनी, अशोक नगर,
प्रयागराज से मुद्रित कराकर ए-12
पत्रकार कालोनी, अशोक नगर
प्रयागराज-211001 से प्रकाशित।

संपादक

विमलेश मिश्र

मो-8429784685

e-mail:

Sahajshakti2021@gmail.com

RNI - UPHIN/2021/83288

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद प्रयागराज न्यायालय के अधीन ही होंगे।

कैंपस कथा यानी निराशा प्रेम और उम्मीद की बात

► कैंपस का जीवन देख भावुक
हुए दर्शक

तिजारत संवाददाता

प्रयागराज। कैम्पस में नौजवानों के व्यक्तित्व को, उनकी आकांक्षाओं, उनके सपनों, उनके प्रेम और उनकी निराशाओं को आकार देता है। कैम्पसों के छात्रों की चेतना कैसे तैयारी होती है, जीवन से उनकी क्या उम्मीदें हैं? क्या यहाँ सभी लोग सफल होते हैं? असफल लोगों के साथ समाज का बर्ताव क्या होता है? असफलता के स्रोत व्यक्ति में हैं या व्यवस्था में? इन सभी सवालों को 'कैम्पस कथा' प्रस्तुति के जरिए यूनिवर्सिटी थियेटर के अभिनेताओं ने स्वराज विद्यापीठ में अपने बेहतरीन अभिनय में प्रस्तुत किया।

प्रस्तुति में हिंदी कथाकार स्वयं प्रकाश की छोटी कहानी 'लड़कियाँ क्या बातें कर रही थीं' है जिसमें कॉलेज जानी वाली लड़कियों की बातचीत के अनुमान के जरिए उनके जीवन के यथार्थ को प्रकट करने की कोशिश की गई है। कहानी एमए



में पढ़ रही लड़कियों के बारे में है जो जीवन के निर्णायक मुहाने पर खड़ी हैं। दूसरी कहानी अखिलेश की 'चिट्ठी' लंबी कहानी है जो ऐसे लड़कों के बारे में है जिनमें विद्रोह, मस्ती और उच्छृंखलता है। समय रेत की तरह उनके हाथों से फिसला जा रहा है। ये कहानी कैम्पस के ऐसे नौजवानों की याद दिलाता है जो कैम्पस के फलक पर चमचमाते हुए उभरते हैं लेकिन गुम हो जाते हैं। परिवार, प्रेम, नौकरी कुछ भी इनके हाथ में नहीं लगता। इस कहानी में इलाहाबाद का छात्र जीवन धड़कता है।

दोनों कहानियों को प्रस्तुति में इस तरह से जोड़ा गया जैसे दोनों एक दूसरे के पक्ष प्रतिपक्ष हों। लड़कियों की बातों को कहने के लिए सूत्रधार लड़का बनता है तो लड़कों की बात कहने के लिए लड़कियाँ।

प्रत्येक दृश्य सजीव लग रहा था चाहे वह चाय की टपरी की गप्प हो या रूम खोजने की जद्दोजहद या जीवन से निराशा के बाद की महफिलों में आशा खोजने का प्रयास। प्रत्येक संवाद दर्शकों के जीवन के यथार्थ से जुड़ा था जिसे या तो वे भोग चुके थे या भोग रहे हैं। संगीत ने संवाद अदायगी को गहराई दी। प्रस्तुति ने दर्शकों को हंसाया, उनके अपने जीवन में ले गया फिर आखिर में रुलाया भी। प्रस्तुति में मंच पर थे शिवम, श्रीह, शुभी, सौम्या, प्राची, दीपशिखा, सौम्या, माधवी, श्रद्धा, सैफ, गौतम, प्रीत, आदित्य, शानु, हर्षित, जयप्रकाश, गौरव, चेतन, अर्पिता, कीर्ति, प्रज्ञा, दुर्गेश। मंच से बाहर की व्यवस्था संभाली हर्ष, अजीत, आदित्य, पूजा, शुभम आदि ने। प्रस्तुति प्रबंधन किया पीयूष ने और ध्वनि संचालन किया सक्षम ने। अभिनय प्रशिक्षण दिया था जहाँगीर ने, संगीत परिकल्पना अमर की थी और निर्देशन था अमितेश कुमार का। प्रस्तुति में प्रोफेसर आरसी त्रिपाठी, बसंत त्रिपाठी, अमित सिंह, उमेश चंद्र, लक्ष्मण गुप्ता आदि अध्यापकों के साथ अजित बहादुर, शिव गुप्ता, नीरज आदि शहर के गणमान्य रंगकर्मी उपस्थित थे।









The Great Divide

DO WE really know Gandhi? The play, *Jab We Met Gandhi*, revolves around a group of students confronting this question as they attempt to create a play on the Father of the Nation. The play-within-a-play by a group of students of the University of Allahabad, *Jab We Met Gandhi* begins with several youngsters opposing the need to even create a production on the Mahatma. The arguments turn into a fight, before one student suggests that all of them read something on Gandhi. As the devised play progresses, director Amitesh Kumar reveals how modern teenagers have little knowledge of Gandhi, apart from what they encounter on social media and hearsay. By the time, the students in the play create a storyline based on *Hind Swaraj*, *My Experiments with Truth* and Gandhi's lectures before his assassination, they feel a transformation as if the visionary leader is present within them. The play was staged at Swaraj Vidyapeeth, Prayagraj, on October 1.





न्यूज डायरी

नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' का मंचन



आगरा। दयालबाग शिक्षण संस्थान में भीष्म साहनी के चर्चित नाटक 'कबिरा खड़ा बाजार में' के मंचन के साथ 11 दिवसीय साहित्य उत्सव का समापन हो गया। नाटक में छात्र-छात्राओं के बेहतर अभिनय पर खूब तालियां बजीं। निर्देशन अमितेश कुमार और सहनिर्देशन शिवा का रहा। नाटक में हर्ष, पीयूष, सोमेश कुमार, अभिषेक, विकल्प, अनुज कुमार, कृष्णा, दीपशिखा, बुद्धप्रिय, नितीश कुमार और सक्षम ने किरदार निभाए। संयोजक डॉ. प्रेमशंकर सिंह ने कहा कि समापन पर छात्रों को प्रमाणपत्र भी दिए। ब्यूरो















सारांश

स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वालों ने ये जरूर सोचा होगा कि आज़ादी कैसी होगी और किसके लिए होगी। वो सपना आज कितना साकार हुआ दिखता है?

क्या भगत सिंह ने ऐसे भारत का सपना देखा था जिसमें कर्ज से तंग किसान आत्महत्या को मजबूर हो जाते हैं? क्या अशाफ़ाक ने साम्प्रदायिकता की आग में झुलसते भारत का सपना देखा था? ये सवाल परेशान करते हैं, और अशांत भी।

हमने क्रांतिकारियों के नज़रिए से ये देखने और दिखाने की कोशिश की है कि उन्होंने कैसे भारत की संकल्पना की थी।

सवाल आता है कि क्रांतिकारियों के नज़रिए से क्यों?

लोगों के मन में अक्सर क्रांतिकारियों को लेकर एक उग्रवादी छवि जुड़ी रहती है, जबकि सच्चाई इससे कहीं दूर है। हम नाटक के ज़रिए इस पूर्वाग्रह को भी मिटाने की कोशिश करना चाहते हैं, उनके विचारों और क्रांतिकारी जीवन में झाँककर।

जब भी स्वतंत्रता संग्राम पर विचार आता है तो संघर्ष की दो धाराएं समझ में आती हैं- एक क्रांतिकारी धारा और दूसरी उदारवादी/अहिंसात्मक धारा।

क्रांतिकारी धारा से हम अक्सर हिंसा को जोड़ते हैं। इस हिंसा का तर्क क्या है? एक सवाल भी है- हिंसा की क्रिया में कभी खुद को आहत करने का सवाल नहीं उठता, फिर ऐसा क्या था कि क्रांतिकारी खुद पर हुई हिंसा को हंसते-हंसते झेल गए?

मंच पर

अभिषेक, प्रशंसा, प्रिंस, शिवा, अनुराग, शिवानी, हर्षिता, शिवम, बुद्धप्रिय, आदर्श, अजीत, अमिता, विवेक, सौरभ, शिवानी, नीलेश, हर्ष, देवेश, राशि, विकास, सिद्धांत, सोमेश, स्नेहिल, विकल्प, पीयूष, अंकित और हिमांशु।

मंच परे

अमिता, दिव्या, सलोनी, महिमा, आस्था, कृष्णा, आश्रुति, अदिति, दीपशिखा, पुनम, पल्लवी, आशिया, अंकिता, अभिषेक, रविकांत, प्रकाश, चन्दन, ज्ञानेन्द्र, रजनीश, स्वाति, विवेक, मुकेश, राज, आदर्श और प्रदीप्त

उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, प्रयागराज

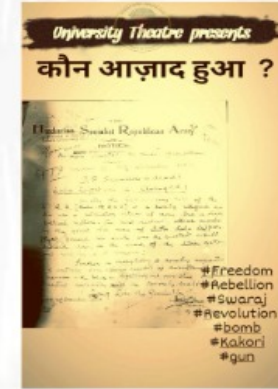
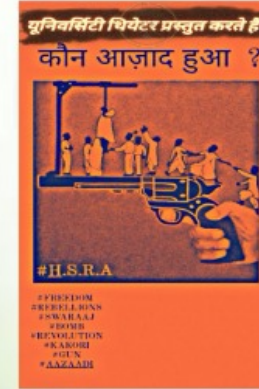
(संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था)

मासिक नाट्य योजना के अंतर्गत

यूनिवर्सिटी थियेटर, प्रयागराज (स्वराज विद्यापीठ)

की प्रस्तुति

कौन आज़ाद हुआ ?



परिकल्पना एवं निर्देशन : अमितेश कुमार

दिनांक : 25 मार्च 2022, सायं 6:00 बजे

स्थान : सांस्कृतिक केन्द्र प्रेक्षागृह, प्रयागराज

आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

निवेदक
प्रो. सुरेश शर्मा
निदेशक





महिलाओं पर बढ़ते हमलों को 'मगध' ने किया रेखांकित

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

प्रयागराज।

मगध जो अब कहने को मगध है, रहने को नहीं और इस स्थिति से किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता दिखाई देता, इस सवाल के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में यूनिवर्सिटी थियेटर समूह के

इविवि के हिंदी विभाग में
यूनिवर्सिटी थियेटर समूह के
छात्रों की नाट्य प्रस्तुति



इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में 'मगध' का मंचन करते। फोटो : एसएनबी

छात्रों ने नाट्य प्रस्तुति की।

नाटक मनोशारीरिक रंगभाषा में हिंदी विभाग की लॉबी में खेला गया, जहां तीन तरफ से दर्शक बैठे थे। प्रस्तुति ख्यात कवि श्रीकांत वर्मा के संग्रह 'मगध' की कुछ कविताओं पर आधारित था जिसमें मगध, हस्तक्षेप, कोसल में विचारों की कमी है। काशी में शव, हस्तिपानूर में रिवाज आदि कविताएं शामिल की गई थीं। स्त्रियों पर बढ़ते हमलों को भी विशेष तौर पर

रेखांकित किया गया जिसमें शव में बदलते जा रहे समाज की चुप्पी को एक चीख से तोड़ा गया और महिलाओं में व्याप्त डर को उभारा गया।

नाटक में अभिनय विदुषी, राशि, श्रेया, दिव्या, अपर्णा, प्रिंस, सौरभ, अभिषेक, राज, नीतीश, आदर्श, प्रकाश, चन्दन, पार्थ, प्रदीप्त और रजनीश ने किया। व्यवस्था में शिवा, नीलेश, प्रांशु, राकेश, पिकी और विवेक के साथ यूनिवर्सिटी थिएटर के

सदस्यों ने किया। संगीत जुगेश का था और परिकल्पना निर्देशन हिंदी विभाग के अध्यापक अमितेश कुमार का था, मार्गदर्शन प्रवीण शेखर का। इस मौके पर प्रो. चंदा देवी, प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. मुस्ताक अली, प्रो. सन्तोष भदौरिया, रंगकर्मी अनिल रंजन भौमिक, कहानीकार मनोज पांडेय और हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापक, पीयूष मिश्र भी मौजूद रहे। सभी ने प्रस्तुति की सरहाना की।

‘मगध’ में स्त्रियों पर बढ़ते हमलों को रेखांकित किया

हिंदी विभाग में यूनिवर्सिटी थियेटर समूह की प्रस्तुति

प्रयागराज। मगध जो अब कहने को मगध है रहने को नहीं और इस स्थिति से किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता दिखाई देता है इस सवाल के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में यूनिवर्सिटी थियेटर

तोड़ा गया और महिलाओं में व्याप्त डर को उभारा गया। नाटक में अभिनय विदुषी, राशि, श्रेया, दिव्या, अपर्णा, प्रिंस, सौरभ, अभिषेक, राज, नीतीश, आदर्श, प्रकाश, चन्दन, पार्थ, प्रदीप्त और रजनीश ने किया।



समूह के छात्रों ने नाट्य प्रस्तुति की। नाटक मनो शारीरिक रंगभाषा में हिंदी विभाग की लॉबी में मंचित हुआ।

नाट्य प्रस्तुति कवि श्रीकांत वर्मा के संग्रह ‘मगध’ की कुछ कविताओं पर आधारित था। जिसमें मगध, हस्तक्षेप, कोसल में विचारों की कमी है, काशी में शव, हस्तिनापुर में रिवाज इत्यादि कविताएं शामिल की गई थी। स्त्रियों पर बढ़ते हमलों को भी विशेष तौर पर रेखांकित किया गया। जिसमें शव में बदलते जा रहे समाज की चुप्पी को एक चीख से

व्यवस्था में शिवा, नीलेश, प्रांशु, राकेश, पिकी और विवेक के साथ यूनिवर्सिटी थिएटर के सदस्य ने किया। संगीत जुगेश का था और परिकल्पना निर्देशन हिंदी विभाग के अध्यापक अमितेश कुमार का था। मार्गदर्शन प्रवीण शेखर का। इस दौरान प्रो. चंदा देवीए प्रो. अबधेश प्रधान, प्रो. मुस्ताक अली, प्रो. सन्तोष भदौरिया, रंगकर्मी अनिल रंजन भौमिक, कहानीकार मनोज पांडेय और हिंदी विभाग के सभी प्राध्यापक, पीयूष मिश्र मौजूद रहे।

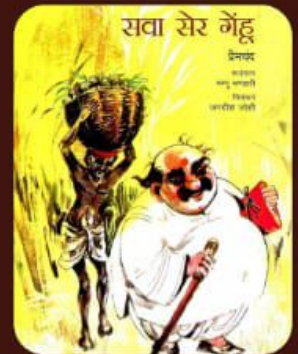
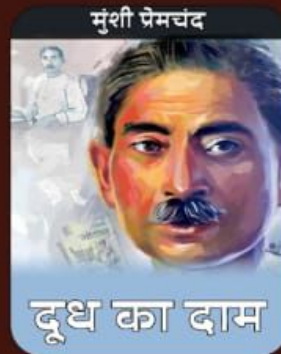


स्वराज विद्यापीठ एवं
यूनिवर्सिटी थिएटर
की प्रस्तुति

स्वराज महोत्सव के
अवसर पर

नाट्य मंचन

कहानीकाव -
प्रेमचंद



दूध का ढाम सवा सेर गेहूँ

दिनांक
12
अगस्त
2024

स्थान
स्वराज विद्यापीठ

समय
05 : 30 PM



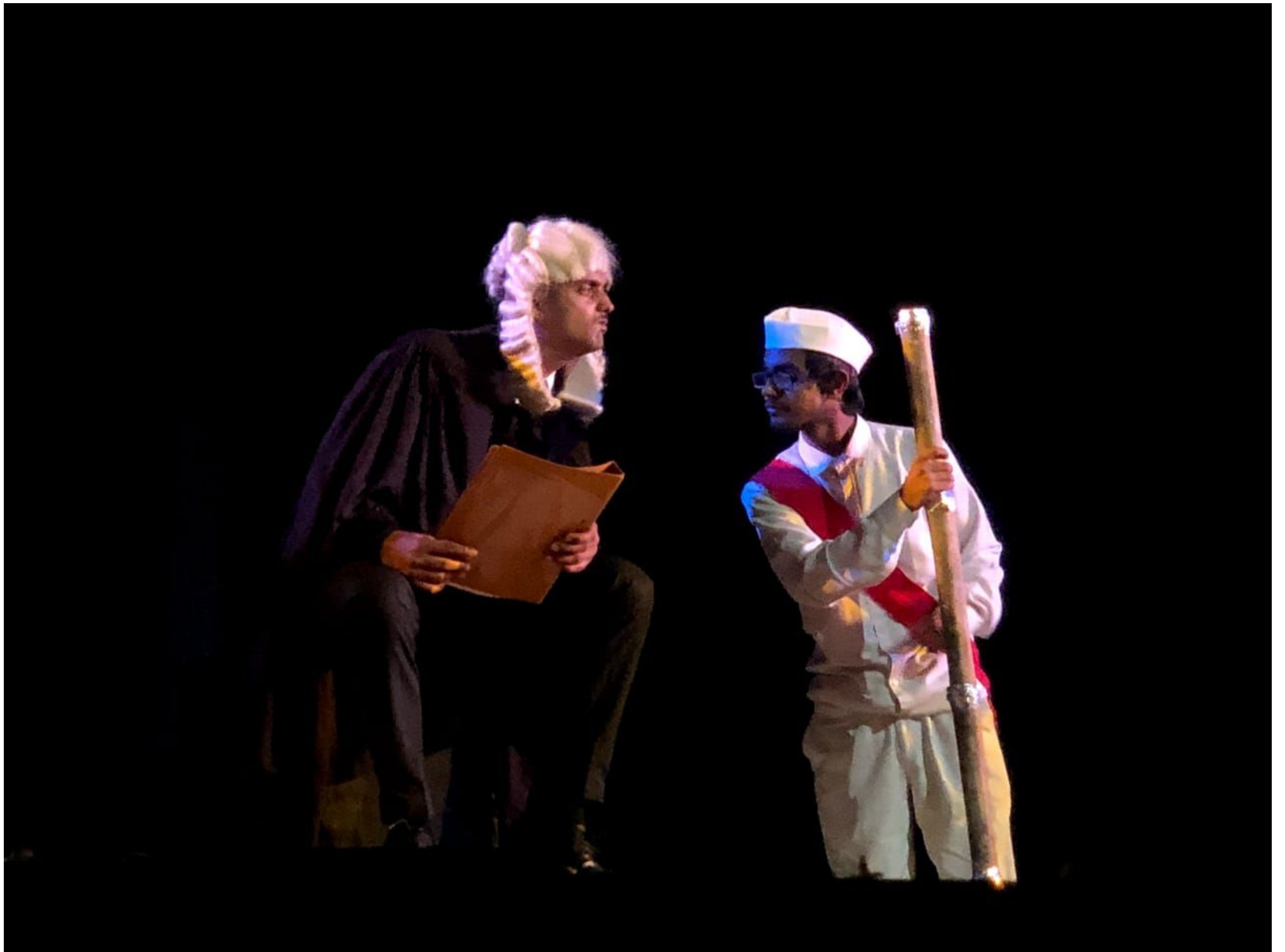
University Theatre AU



6203895305
7068674741







त्रिधारा नाट्य महोत्सवमें नाटक 'सड़क' का मंचन



त्रिधारा नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन प्रवीण शेखर और अमितेश कुमार के निर्देशन में हबीब तनवीर लिखित नाटक सड़क का मंचन हुआ। यह नाटक यूनिवर्सिटी थिएटर के कलाकारों ने प्रस्तुत किया। नाटक ने शुरू से अंत तक दर्शकों को जोड़ कर रखा, तालियों और हंसी के ठहाके प्रस्तुति के दौरान गूंजते रहे। नाटक में दिखाया गया कि एक सड़क

है जो तोड़ दी गयी है, किसने तोड़ी? इसका मुकद्दमा अदालत में है। अदालत में उद्योगपतियों और ग्रामीणों के बीच यह मुकद्दमा विकास किसके लिए और क्यों की बहस में बदल जाता है। जज आखिर में गांव वालों को कहते हैं कि अपने तरीके से विकास करने के लिए पढ़ो-लिखो और सक्षम बनो। इन सब एक दिलचस्प रंगभाषा में सामने आयी।

यह नाटक विकास की तर्ज पर विलुप्त होते हुए जंगल जमीन की समस्या को हास्यव्यंग्य के माध्यम से दर्शकों के समक्ष लाता है। सड़क जिसे विकास का पैमाना माना जाता है, जो वास्तव में भ्रष्टाचार की पुनियाद है, इस नाटक के केंद्र में है। सड़क के टूट जाने पर उद्योगपति वर्ग अशिक्षित ग्रामीणों पर इसका आरोप लगाते हैं जिसकी सुनवाई अदालत में होती है।

अलखा जनकवि कैलाश गौतम के महाहर गीत 'कचहरी न जाना' को भी शामिल किया गया। प्रस्तुति में मंच पर विदुषी, अंकिता, पोयूष, शिवानी, नाथवी, रानु, पूजा, पूनम, दीक्षा, सोमेश, मोहित, आर्यन, शुभम, दीपशिखा, राहुल,

**विलुप्त होते जल,
जंगल, जमीनके साथ
विकासका उठा सवाल**

पल्लवी, आदित्य, मनीषा, प्रियंका, अंकित, राल्फ, आदित्य राज, इतिका, त्रिज्या, कुणाल, अंकित, आलोक आदि अभिनेता के रूप में मौजूद थे। मंच के पीछे से इनका सहयोग शिवम, ज्ञानेंद्र, अनुज, सलोनी, नीतेश, अमिता, उत्पल, धीरज, अभिनव, अनिल और आदर्श कर रहे थे। प्रकाश परिकल्पना दोनी सिंह की थी और ध्वनि परिकल्पना अमर सिंह की। सामग्री निर्माण निखिलेश कुमार भौर्य ने किया।

पेपर - आज

दिनांक - 20/02/2023

सड़क के बहाने दिखा ग्रामीणों उद्योगपतियों के बीच का संघर्ष

हबीब तनवीर की प्रस्तुति से सांस्कृतिक केंद्र में त्रिधारा नाट्य महोत्सव का समापन

प्रयागराज। त्रिधारा नाट्य महोत्सव के समापन पर सांस्कृतिक केंद्र प्रेक्षागृह में नाटक सड़क के मंचन के माध्यम से चुटीले अंदाज में सामाजिक विसंगतियों को बखूबी रेखांकित किया गया। हबीब तनवीर लिखित नाटक का निर्देशन अमितेश कुमार और प्रवीण शेखर ने किया।

यूनिवर्सिटी थिएटर की प्रस्तुति के माध्यम से सड़क को रूपक बनाया गया है जो दो पक्षों के बीच संघर्ष का कारण है। यह पक्ष ग्रामीणों और उद्योगपतियों का रहा। वैसे तो हर

चुनाव में जनता सड़क बनवाने की मांग करती है लेकिन यहां जनता सड़क के ही खिलाफ है।

दावा यह कि यह विकास की सड़क है लेकिन सवाल यह कि यह विकास किसका और इसकी कीमत क्या है। ग्रामीण कहते हैं कि यह सड़क उद्योगपतियों के विकास के लिए बनी है। विकास की होड़ में पर्यावरण और परिवेश को हो रही क्षति पर भी टिप्पणी की गई।

दिलचस्प रंगभाषा के साथ भ्रष्टाचार की बुनियाद तक पहुंचने

की कोशिश की गई। मूल संवाद छतीसगढ़ी में रहा। हालांकि अक्वथी, भोजपुरी को भी शामिल किया गया। संवाद दर्शकों को गुदगुदाते रहे।

प्रस्तुति के लिए विदुषी, अंकिता, पीयूष, शिवानी, माधवी, शानु, पूजा, पूनम, दीक्षा, सोमेश, मोहित, आर्यन, शुभ, दीपशिखा, राहुल, पल्लवी, आदित्य, मनीषा, प्रियंका, अंकित आदि ने अपनी-अपनी भूमिकाओं से न्याय किया। प्रकाश परिकल्पना टोनी सिंह जबकि ध्वनि परिकल्पना अमर सिंह की रही। संवाद



सांस्कृतिक केंद्र में त्रिधारा नाट्य महोत्सव में रविवार को नाटक सड़क का मंचन करते कलाकार।
अमर उजाला

पेपर- अमर उजाला

दिनांक- 20/02/2023



त्रिधारा नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन रविवार को नाटक 'सड़क' का मंचन करते कलाकार। • हिन्दुस्तान

स्वच्छ परिवेश के लिए टूटी सड़क से खुश...

प्रयागराज, संवाददाता। त्रिधारा नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन रविवार को यूनिवर्सिटी थिएटर की ओर से नाटक 'सड़क' की व्यंग्यपूर्ण प्रस्तुति की गई। हबीब तनवीर लिखित नाटक का निर्देशन रंगकर्मी प्रवीण शेखर और रंगकर्मी अमितेश कुमार ने किया। लोक संगीत के साथ सजे नाटक की जीवंत प्रस्तुति दर्शकों को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ती रही। कलाकारों ने हास्य संवाद के साथ जल, जंगल और जमीन को बचाने का भी संदेश दिया।

कथानक के अनुसार गांव में एक सड़क है, जो तोड़ दी गई है। किसानों ने तोड़ा इसका पता नहीं चलता। सड़क के टूटने का मुकदमा चलता है। जज गांव वालों से कहते हैं कि विकास के

- कलाकारों ने जल जंगल और जमीन को बचाने का दिया संदेश
- लोक संगीत से सजे नाटक की व्यंग्यपूर्ण प्रस्तुति की गई

लिए पढ़ो-लिखो और सक्षम बनो। सड़क जिसे विकास का पैमाना माना जाता है, लेकिन वह भ्रष्टाचार की बुनियाद है। गांव के लोग सड़क टूट जाने पर खुश हैं क्योंकि सड़क ने जंगल, जमीन, पशु और फल को नष्ट कर दिया है। नाटक का दृश्य बदलता है। पर्दे पर अंधेरा छा जाता है। लेकिन हास्यपूर्ण संवाद के कलाकार दर्शकों

को विकास की अवधारणा को बताते हैं। मंच पर ग्रामीण एकत्र होते हैं और कहते हैं कि सड़क उनके विकास के लिए नहीं बल्कि उद्योगपतियों के विकास के लिए बनी है। हबीब तनवीर के गीतों के अलावा जनकवि कैलाश गौतम की कालजयी रचना कचहरी न जाना के अंश की प्रस्तुति की गई। संगीत जुगेश कुमार गुप्ता का रहा। तबले पर संगत हर्ष यादव, ढोलक पर अजीत द्विवेदी ने किया। कलाकारों में विदुषी, अंकिता, पीयूष, शिवानी, माधवी, शानु, पूजा, पूनम, दीक्षा, सोमेश, मोहित, आर्यन, शुभम, दीपशिखा, राहुल आदि रहे। प्रकाश परिकल्पना टोनी सिंह, ध्वनि अमर सिंह और सामग्री निर्माण निखिलेश कुमार मौर्य का रहा।

पेपर - हिन्दुस्तान

दिनांक - 20/02/2023

युवा जागरण

328

परीक्षा केंद्रों पर पूरी कक्षा के छात्रों को भर्ती करने के लिए

22

कक्षाओं की शिक्षा के अभाव में

मंच पर 'सड़क' बता गई गांव की हकीकत

जागरण संवाददाता, प्रयागराज : एक सड़क है जो सड़क से नहीं है, किसने कहा? यह बात लगाने के लिए मुंबई में एक अदालत में है। उद्योगपतियों और ग्रामीणों के बीच यह मुंबई में विकास किसके लिए और 'सड़क' की कहानी में बदल जाया है। अदालत में ग्रामीणों से कहा जाता है कि अपने तरीके से विकास करने के लिए पैसे लिखें और सड़क बनाएं। रीतिरिवाज को यह दिलावस्त कहानी रीतिरिवाज में रहने आई। अदालत को उत्तर मध्य क्षेत्र संस्कृतिक केंद्र में आयोजित नाटक 'सड़क' के मंचन का।

- विकास नाटक मंचन के लिए एनसीईईटीसी में हुआ मंचन
- दर्शकों को मुद्दों पर गांव की हकीकत और संवाद

विकास नाटक मंचन के लिए अदालत किंग्स इस नाटक का निर्देशन प्रवीण खेखर और अभिनेता कुमार ने किया। लेखन हबीब तनवीर का रहा। एनसीईईटी विकास के कलाकारों ने मंचन किया। यह नाटक विकास कहानी के चलते लिखित होतों हुए जंगल जमीन की समस्या को हमारे समाज के माध्यम

से दर्शकों के सामने प्रस्तुत करने का था। सड़क, गांव विकास का पैमाना माना जाता है, जो वास्तव में प्रदूषण की बुनियाद है, इस नाटक के केंद्र में यह विषय रहा। जंगल कुम्हार गुला ने मंचन में शोभा पाया। प्रस्तुति के दौरान जयकृति केलाश शैलम के चर्चित गीत 'कचहरी न जंगल' को भी शामिल किया गया।

मंच पर विरूषी, अंकिता, पीयूष, शिवाजी, साधवी, राहु, पूष, पुष्पा, दीक्षा, सोनिया, मोहित, आर्जुन, शुभम, टीपरीशा, राहुल, फलकी, आदित्य आदि ने अभिनय किया।



उत्तर मध्य क्षेत्र संस्कृतिक केंद्र ने विकास नाटक मंचन के लिए 'सड़क' नाटक का मंचन करने का प्रयास किया

पेपर - दैनिक जागरण

दिनांक - 20/02/2023

परिवेश की हानि पर तीखी टिप्पणी है नाटक सड़क

त्रिधारा नाट्य महोत्सव में नाटक के जरिए कलाकारों ने बताई विलुप्त होते जल, जंगल, ज़मीन की अहमियत

लोकमित्र ब्यूरो

प्रयागराज। त्रिधारा नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन प्रवीण सेखर और अभिलेख कुमार के निर्देशन में हबीब तनवीर लिखित नाटक सड़क का मंचन हुआ। यह नाटक सुनिवर्सिटी थिएटर के कलाकारों ने प्रस्तुत किया। एक सड़क है जो तोड़ दी गई है, किसने तोड़ी? इसका मुकद्दमा अदालत में है। अदालत में उद्योगपतियों और ग्रामीणों के बीच यह मुकद्दमा विकास किसके लिए और क्यों की बहस में बदल जाता है। जज अखिर में गांव वालों को कहते हैं कि अपने तरीके से विकास करने के लिए पढ़ो, लिखो और सक्षम बनें। यह सब एक दिलचस्प रंगभंगा में सामने आया। यह नाटक विकास की तर्ज पर विलुप्त होते जंगल, जमीन की समस्या को हमस्र व्यंग्य के माध्यम से दर्शकों के समक्ष लाता है। सड़क जिसे विकास का पैमाना माना जाता है, जो वास्तव में भ्रष्टाचार की बुनियाद है, इस नाटक के केंद्र में है। सड़क के टूट जाने पर उद्योगपति वर्ग अतिरिक्त ग्रामीणों पर इसका आरोप लगाते हैं जिसकी सुनवाई अदालत में होती है। ग्रामीण वर्ग सड़क टूट जाने पर खुश है क्योंकि इस सड़क ने उनकी आजीविका (जंगल, जमीन, पशु, फल) को खत्म



कर दिया है। वहीं उद्योगपति और डेकेटर जो विकास के लिए आए पैसे को अपनी जेब में रखाकर नाममात्र की सड़क का निर्माण करते हैं; सड़क के टूटने का कारण ग्रामीणों की उत्पन्न कर बच जाना चाहते हैं। सड़क के टूटने के पीछे का कारण क्या है? यह तो नाटक नहीं बताता, इसे वह अपने दर्शकों के ऊपर छोड़ देता है परन्तु स्पष्ट व्यवस्था इस बात पर जोर देती है कि गांव का वास्तविक विकास तो ग्रामीणों के हाथ में है, कहीं तो जनता

की हर चुनाव में मुख्य मांग रहती है सड़क की और कहाँ इस नाटक में जनता सड़क के ही चित्रण है। ठावा यह है कि यह सड़क ही विकास का सड़क है। यहाँ हबीब विकास की अवधारणा को ही समझावस्त कर देते हैं। नाटक सोचे हो यह सवाल करता है कि विकास किसका? और इस विकास की कीमत क्या है? ग्रामीण कहते हैं कि सड़क उनके विकास के लिये नहीं बल्कि उद्योगपतियों के विकास के लिये बनी है और उस

सड़क के बनने से उन्हें क्या क्या हानियाँ हुई हैं? विकास की होड़ में पर्यावरण और परिवेश को हो रही क्षति पर यह नाटक सीधे टिप्पणी करता है। इस नाटक के मूल संवाद छातीमगड़ी में है लेकिन प्रस्तुति में उन संवादों की गह है ताकि दर्शक नाटक से जुड़ सकें और अभिनेता भी अपनी मातृभाषा में सहज रहें। संवाद, दर्शकों को गूढ़गुंते हैं और हँसते-हँसते ही उनका ध्यान उस समस्या की ओर ले जाते हैं

जिससे भारत के अर्थव्यवस्था गांव जुड़ रहे हैं। प्रस्तुति का एक उल्लेखनीय पक्ष संगीत भी है। जुगल कुमार गुप्ता के संगीत में तबले पर हर्ष यादव और झेलक पर अशीत द्विवेदी ने जबरदस्त समय बाँधा जिसमें कोरस ने भी भरपूर साथ दिया।

प्रस्तुति में हबीब तनवीर के गीतों के अलावा जनकवि कैलाश गीतम के मशहूर गीत 'कचहरी न जाना' को भी शामिल किया गया। नाटक ने शुरू से अंत तक दर्शकों को जोड़ कर रखा, तस्नियों और हंसी के तहलके प्रस्तुति के दौरान सुनते रहे। प्रस्तुति में मंच पर किटुबी, अकिता, पीयूष, शिवानी, माधवी, शानु, पूजा, पुनम, दीक्षा, सोमेश, मोहित, आर्पन, शुभम, दीपशिखा, राहुल, पाखी, आदित्य, मनीषा, प्रिंका, अकिता, रायक, आदित्य राज, हलिका, त्रिज्या, कुणाल, अकिता, आलोक आदि अभिनेता के रूप में मौजूद थे। मंच के पीछे से इनका सहयोग शिवम, ज्ञानेंद्र, अनुज, सलोनी, नीतेश, अमिता, उत्पल, धीरज, अर्धनभ, अर्जुन और आदर्श कर रहे थे। प्रकाश परिकल्पना टोनी सिंह की थी जबकि ध्वनि परिकल्पना अमर सिंह की। सामग्री निर्माण निखिलेश कुमार वीर्य ने किया।

पेपर- लोकमित्र

दिनांक- 20/02/2023

त्रिधारा नाट्य महोत्सव में नाटक 'सड़क' का मंचन

प्रयागराज। त्रिधारा नाट्य महोत्सव के दूसरे दिन प्रवीण शंखर और अमितेश कुमार के निर्देशन में हबीब तनवीर लिखित नाटक सड़क का मंचन हुआ। यह नाटक यूनिवर्सिटी थिएटर के कलाकारों ने प्रस्तुत किया।

एक सड़क है जो तोड़ दी गई है, किसने तोड़ी? इसका मुकद्दमा अदालत में है। अदालत में उद्योगपतियों और ग्रामीणों के बीच यह मुकद्दमा विकास किसके लिए और क्यों की बहस में बदल जाता है। जज आखिर में गाँव वालों को कहते हैं कि अपने तरीके से विकास करने के लिए पढ़ो लिखो और सक्षम बनो। इन सब एक दिलचस्प रंगभाषा में सामने आई।

यह नाटक विकास की तर्ज पर विलुप्त होते हुए जंगल जमीन की समस्या को हास्यव्यंग्य के माध्यम से दर्शकों के समक्ष लाता है। सड़क जिसे विकास का पैमाना माना जाता है, जो वास्तव में भ्रष्टाचार की बनियाद है, इस



नाटक के केंद्र में है, सड़क के टूट जाने पर उद्योगपति वर्ग अशिक्षित ग्रामीणों पर इसका आरोप लगाते हैं जिसकी सुनवाई अदालत में होनी है। ग्रामीण वर्ग सड़क टूट जाने पर खुश है क्योंकि इस सड़क ने उनकी आजीविका (जंगल, जमीन, पशु, फल) को खत्म कर दिया है। वहीं उद्योगपति और ठेकेदार जो विकास के लिए आए पैसे को अपनी जेब में रखकर नाममात्र की सड़क का निर्माण करते हैं; सड़क के टूटने का कारण ग्रामीणों की ठहरा कर बच जाना

चाहते हैं।

सड़क के टूटने के पीछे का कारण क्या है? यह तो नाटक नहीं बताता, इसे वह अपने दर्शकों के ऊपर छोड़ देता है परन्तु न्याय व्यवस्था इस बात पर जोर देती है कि गाँव का वास्तविक विकास तो ग्रामीणों के हाथ में है, कहीं तो जनता की हर चुनाव में मुख्य मांग रहती है सड़क की और कहीं इस नाटक में जनता सड़क के ही खिलाफ है, दावा यह है कि यह सड़क ही विकास का सड़क है। यहाँ हबीब विकास की

अवधारणा को ही समस्याग्रस्त कर देते हैं, नाटक सीधे ही यह सवाल करता है कि विकास किसका? और इस विकास की कीमत क्या है? ग्रामीण कहते हैं कि सड़क उनके विकास के लिये नहीं बल्कि उद्योगपतियों के विकास के लिये बनी है और उस सड़क के बनने से उन्हें क्या क्या हानियाँ हुई हैं? विकास की होड़ में पर्यावरण और परिवेश को हो रही क्षति पर यह नाटक सीधे टिप्पणी करता है।

इस नाटक के मूल संवाद छत्तीसगढ़ी में हैं लेकिन प्रस्तुति में उन संवादों की योजना अवधी और भोजपुरी में की गई है ताकि दर्शक नाटक से जुड़ सकें और अभिनेता भी अपनी मातृभाषा में सहज रहें, संवाद, दर्शकों को गुदगुदाते हैं और हंसाते-हंसाते ही उनका ध्यान उस समस्या की ओर ले जाते हैं जिससे भारत के अधिकांश गांव जूझ रहे हैं।

पेपर - प्रयाग टाइम्स

दिनांक -20/02/2023



Poster



“21 फरवरी, 2019, अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस”

के अवसर पर राजभाषा अनुभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के तत्वावधान में नाटक / कहानी के मंचन में आप सादर आमंत्रित हैं।

भोलाराम का जीव (हरिशंकर परसाई)

सिरी उपमा जोग (शिवमूर्ति)

निर्देशन

डॉ. अमितेश कुमार

डॉ. लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता

निर्देशन सहयोग – श्री प्रवीण शेखर

प्रस्तुति – यूनिवर्सिटी थियेटर (थियेटर एवं फिल्म सोसाइटी)
इलाहाबाद विश्वविद्यालय

स्थान- सीनेट हॉल, इ.वि.वि.

दिनांक – 21 फरवरी, 2019 | समय – 12.00 बजे

आयोजक – राजभाषा अनुभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय



